हमें पुराने मापदंड बदलने होंगे

आदर्श सभलोक

इलाहाबाद के पास डौना गांव में 45 वर्षीय शिवपती को गांव की पटेल जाति के लोगों ने नंगा कर लाठियों के ज़ोर पर सारे गांव में घुमाया। जब उसने अपने हाथों से अपने शरीर को ढकने की कोशिश की तो उन लोगों ने उसके हाथों को भी पीछे खींच लिया।

एक औरत के साथ दिन दिहाड़े इतना बर्बरता पूर्ण व्यवहार किया गया। गांव के लोगों की भीड़ इकठ्ठी हो गई। सैंकड़ों लोग यह अन्याय देखते रहे, परंतु उस औरत की मदद के लिए कोई भी आगे बढ़ कर नहीं आया। इतना ही नहीं, शिवपती का पति जब पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करवाने गया तो पुलिस कर्मचारियों ने उसकी शिकायत दर्ज करने से भी इंकार कर दिया।

इस शर्मनाक घटना को पढ़कर मन दुःख से भर गया पर साथ ही मन में सवाल उठा कि कब तक औरत जाति पर इस तरह अत्याचार होता रहेगा? कब तक आपसी झगड़ों में औरत को बलि का बकरा बनाया जाता रहेगा? जमीन-जायदाद का झगड़ा हो या किसी से कोई बदला लेना हो, क्यों उस परिवार की औरतों के ऊपर यौनिक अत्याचार किया जाता है? कभी उस परिवार की औरतों से बलात्कार किया जाता है तो कभी उस परिवार की किसी बेटी को गुंडों द्वारा उठवा दिया जाता है। कभी किसी औरत को शिवपती की तरह नंगा कर खुलेआम सड़कों पर घुमाया जाता है। आज औरत की यह दुर्दशा क्यों हो गई है?

आत्मविश्वास की सीख

समय आ गया है जब औरत को स्वयं ही पुराने मापदंड बदल कर समाज को नए मापदंड देने होंगे। अब औरत को स्वयं ही अपनी रक्षा के तरीके सोचने होंगे। कल तक मां ससुराल जाती बेटी को शिक्षा दिया करती थी, "बेटी, घर की बात बाहर किसी ने न कहना।" इसी तरह के और भी कई डर व नियम बेटी के दिमाग में बिठा कर मां अपनी बेटी को ससुराल के लिए विदा करती थी। ऐसी शिक्षा से औरत के मन में डर व हीनभावना पनपती है। वह अपने नए वातावरण में कभी भी सहज होकर व्यवहार नहीं कर सकती। हर समय डरी, सहमी रहती है। अन्याय को चुपचाप सहते-सहते औरत अपना साहस व विश्वास खो बैठती है। औरत के कमज़ोर व साहसहीन होते ही मर्द लोग उस पर अत्याचार करना शुरू कर देते हैं।

आज हर मां को अपनी बेटी को शिक्षा देनी होगी, "बेटी, तू अन्याय कभी न सहना।"

पहले मां अपनी बेटी को पालती पोसती थी, बड़ा करती थी सिर्फ दूसरों की सेवा करने के लिए, दूसरों के काम आने के लिए उसे तैयार करती थी चाहे वह बेटी के मां-बाप का घर हो या ससुराल परिवार हो। बात-बात पर मां अपनी ही बेटी को टोकती थी, "बेटी, धीरे बोला करो।" और अब धीरे बोलते-बोलते औरत की आवाज़ पुरुष की

ऊंची आवाज़ में गुम ही हो गई।

आवाज़ बुलंद कर

आज औरत को ऊंचे स्वर में बोलना है। अपनी बात हज़ारों लोगों को सुनानी है। अपनी समस्याओं को समाज के सामने रखना है और मिलजुल कर उन समस्याओं के हल ढूंढने हैं। आज औरत को एकजुट होकर अपने अधिकारों को लेना है। आज हर औरत को औरत का साथ देना है चाहे वह किसी भी रूप में एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हो।

अभी तक बहुत घरों में यह देखा जाता है कि जब कभी कोई लड़की अपनी मर्ज़ी से लीक से हट कर कोई काम करना चाहती है तो उसे यह कह कर निरुत्साहित किया जाता है, "लोग क्या कहेंगे।" ऐसे विचार भी औरत का आत्मविश्वास कम करते हैं और उसके मन में डर व निराशा की भावना भरते हैं।

नई जिम्मेदारियां

आज औरत को अपने जीवन के फैसले स्वयं करने हैं। कल तक कुछ काम केवल मर्द ही करते थे। पर आज औरत के ऊपर जब भी घर-परिवार की जिम्मेदारी का बोझ आया तो उसने ईमानदारी से रोटी कमाने के लिए ऐसे काम भी किए जो काम कल तक मर्द ही किया करते थे। चाहे वह काम ट्रक चलाने का हो, चाहे शमशान भूमि में मुर्दों के क्रियाकर्म करने का हो और चाहे घर-घर जाकर अखबार बांटने का काम हो।

गया की निर्मला देवी पांडे अपना घर संभालने के साथ-साथ अखबार बेचने का काम करती है। सूरज निकलने से पहले ही वह अखबारों का बंडल लेकर घर से निकल पड़ती है। पहले वह घर-घर जाकर अखबार बांटती है और फिर दफ्तर के सामने फुटपाथ पर बैठ कर अखबार बेचती है।

ब्राह्मण परिवार की होने के कारण रिश्तेदारों और बिरादरी के लोगों ने उसे अपनी बिरादरी से बाहर निकालने की धमकी भी दी है। फिर भी वह अखबार बेचने का काम कर रही है। उन रिश्तेदारों के लिए वह कहती है, "जब वह मेरे घर का खर्चा नहीं उठा सकते तो उन्हें मेरे काम के बारे में बातें करने का कोई अधिकार नहीं।"

आज औरत को अपनी शक्ति को पहचानने की ज़रूरत है। औरत जब कभी भी किसी काम को करने का दृढ़ निश्चय कर लेती है तो उस काम को वह कर के ही छोड़ती है। बस ज़रूरत है निश्चय करने की और अपनी शक्ति की छाप समाज पर छोड़ने की।

पुराने बंधनों को
अब तोड़ डालो
तुम अबला नहीं,
इक सबला हो,
यह नया नाम
अब जोड़ डालो।